भेदरूप से जानना वह द्रव्यश्रुतज्ञान है अथवा भावश्रुत तो अनुभव रूप है तथा द्रव्यश्रुत शब्द-विस्तार तथा विकल्परूप है।

गाथा-१६

(५०) साधु पुरुष को दर्शन, ज्ञान तथा चारित्र का ही सेवन करना चाहिए; क्योंकि ये तीनों आत्मा ही हैं, अन्य नहीं हैं अर्थात् आत्मा से भिन्न नहीं हैं। आत्मा के अनुभव में दर्शन-ज्ञान-चारित्र तीनों गर्भित हैं।

(५१) प्रमाणदृष्टि में वस्तु सदा द्रव्य-पर्यायरूप है; परन्तु शुद्ध द्रव्यार्थिक नय से आत्मा अभेदरूप एक या एकाकाररूप है तथा व्यवहार दृष्टि में भेदरूप अनेक या अनेकाकाररूप है। शुद्धद्रव्यार्थिक नय की दृष्टि में आत्मा एकाकार अनुभवरूप है – इस द्रव्यदृष्टि में पर्यायार्थिक दृष्टि गौण होती है।

– प्रस्तुति : डॉ. उत्तमचन्द जैन, छिन्दवाड़ा

3. श्रीसमयसार जी - ४७ शक्तियाँ

ज्ञानानंदस्वभावी आत्मा के एक ज्ञानमात्र भाव के भीतर अनंत शक्तियाँ उछलती हैं, उनमें से ४७ शक्तियों का व्याख्यान आचार्य अमृतचन्द्रदेव ने समयसार की आत्मख्याति टीका के परिशिष्ट में किया है। आचार्यदेव ने उनका संस्कृत भाषा में बहुत ही सारगर्भित विवेचन अत्यंत संक्षेप में प्रस्तुत किया है, उसी विवेचन के आधार पर यहाँ संस्कृत व्याख्या के साथ उनका संक्षिप्त सारांश भी प्रस्तुत किया गया है।

१. **जीवत्वशक्ति – आत्मद्रव्यहेतुभूतचैतन्यमात्रभावधारण लक्षणा जीवत्वशक्तिः।** अर्थात् जिस शक्ति के कारण आत्मा, आत्मद्रव्य के कारणभूत चैतन्यमात्र भावप्राण को धारण करता है, उसे जीवत्वशक्ति कहते हैं।

२. **चितिशक्ति – अजडत्वात्मिका चितिशक्तिः।** अर्थात् जिस शक्ति के कारण आत्मा, जड़रहित चेतनस्वरूप होता है, उसे चितिशक्ति कहते हैं।

३. **दृशिशक्ति – अनाकार उपयोगमयी दृशिशक्तिः।** अर्थात् जिस शक्ति के कारण आत्मा, अनाकार दर्शनोपयोग स्वरूप होता है, उसे दृशिशक्ति कहते हैं।

४. **ज्ञानशक्ति – साकार उपयोगमयी ज्ञानशक्तिः।** अर्थात् जिस शक्ति के कारण आत्मा, साकार ज्ञानोपयोगमयी स्वरूप होता है, उसे ज्ञानशक्ति कहते हैं।

५. **सुखशक्ति – अनाकुलत्वलक्षणा सुखशक्तिः।** अर्थात् जिस शक्ति के कारण आत्मा, अनाकुल सुखस्वरूप होता है, उसे सुखशक्ति कहते हैं।

६. **वीर्यशक्ति – स्वरूपनिर्वर्तनसामर्थ्यरूपा वीर्यशक्तिः।** अर्थात्

जिस शक्ति के कारण आत्मा, स्वरूप-रचना करने की सामर्थ्य से सहित होता है, उसे वीर्यशक्ति कहते हैं।

७. प्रभुत्वशक्ति – अखण्डितप्रतापस्वातंत्र्यशालित्वलक्षणा प्रभुत्वशक्तिः। अर्थात् जिस शक्ति के कारण आत्मा, अखण्डित प्रताप एवं स्वतंत्रता से शोभित होता है, उसे प्रभुत्वशक्ति कहते हैं।

८. विभुत्वशक्ति – सर्वभावव्यापकैकभावरूपा विभुत्वशक्तिः। अर्थात् जिस शक्ति के कारण आत्मा, सर्वभावों में व्यापक एकभावस्वरूप रहता है, उसे विभुत्वशक्ति कहते हैं।

९. सर्वदर्शित्वशक्ति – विश्वविश्वसामान्यभावपरिणतात्मदर्शनमयी सर्वदर्शित्वशक्तिः। अर्थात् जिस शक्ति के कारण आत्मा, समस्त विश्व के सामान्यभाव से परिणमित आत्मदर्शनमयी होता है, उसे सर्वदर्शित्व शक्ति कहते हैं।

१०. सर्वज्ञत्वशक्ति – विश्वविश्वविशेषभावपरिणतात्मज्ञानमयी सर्वज्ञत्वशक्तिः। अर्थात् जिस शक्ति के कारण आत्मा, समस्त विश्व के विशेष भावों को जाननेरूप से परिणमित आत्मज्ञानमयी होता है, उसे सर्वज्ञत्व शक्ति कहते हैं।

११. स्वच्छत्वशक्ति– नीरूपात्मप्रदेशप्रकाशमानलोकालोकाकारमेचकोपयोग लक्षणा स्वच्छत्वशक्तिः। अर्थात् जिस शक्ति के कारण आत्मा, अमूर्तिक आत्मप्रदेशों में प्रतिबिम्बत समस्त लोकालोक के आकारों के कारण विचित्र उपयोग लक्षणवाला होता है, उसे स्वच्छत्वशक्ति कहते हैं।

१२. प्रकाशशक्ति – स्वयंप्रकाशमानविशदस्वसंवित्तिमयी प्रकाशशक्तिः। अर्थात् जिस शक्ति के कारण आत्मा, स्वयं प्रकाशमान निर्मल स्वसंवेदनमयी होता है, उसे प्रकाशशक्ति कहते हैं।

१३. असंकुचितविकासत्वशक्ति – क्षेत्रकालानवच्छिन्नचिद्विलासात्मिका असंकुचितविकासत्वशक्तिः। अर्थात् जिस शक्ति के कारण आत्मा, क्षेत्र और काल से संबन्धी सीमाओं, मर्यादा एवं बाधाओं से अबाधित सदा चिद्विलास स्वरूप रहता है, उसे असंकुचितविकासत्वशक्ति कहते हैं।

१४. अकार्यकारणत्वशक्ति – अन्याऽक्रियमाणाऽन्याऽकारकैकद्रव्यात्मिकाऽकार्यकारणत्वशक्तिः। अर्थात् जिस शक्ति के कारण आत्मा, अन्य द्रव्य का कार्य या कारण नहीं होता और सदाकाल एकद्रव्यात्मक बना रहता है, उसे अकार्यकारणत्वशक्ति कहते हैं।

१५. परिणम्यपरिणामकत्वशक्ति – परात्मनिमित्तक ज्ञेयज्ञानाकारग्रहणग्राहणस्वभावरूपा परिणम्यपरिणामकत्वशक्तिः। अर्थात् जिस शक्ति के कारण आत्मा, परनिमित्तक ज्ञेयाकारों को ग्रहण करने के कारण **परिणम्य** तथा स्व निमित्तक ज्ञानाकारों द्वारा उन्हें ग्रहण कराने के स्वभावरूप होने के कारण **परिणामक** होता है, उसे परिणम्य परिणामकत्व शक्ति कहते हैं।

१६. त्यागोपादानशून्यत्व शक्ति – अन्यूनातिरिक्तस्वरूपनियतत्वरूपा त्यागोपादानशून्यत्व शक्तिः। अर्थात् जिस शक्ति के कारण आत्मा, न्यून-अधिकता से रहित स्वरूप में नियत रहता है, उसे त्यागोपादानशून्यत्वशक्ति कहते हैं।

१७. अगुरुलघुत्वशक्ति – षट्स्थानपतितवृद्धिहानिपरिणतस्वरूपप्रतिष्ठत्वकारणविशिष्ट गुणात्मिका अगुरुलघुत्वशक्तिः। अर्थात् जिस शक्ति के कारण आत्मा, षट्गुणी वृद्धि-हानि से परिणमित होते हुए भी स्वरूप में प्रतिष्ठित होने के विशिष्ट गुणस्वरूप रहता है, छोटा-बड़ा नहीं होता है, उसे अगुरुलघुत्वशक्ति कहते हैं।

१८. उत्पादव्ययध्रुवत्वशक्ति – क्रमाक्रमवृत्तित्वलक्षणा-

उत्पादव्ययध्रुवत्वशक्तिः। अर्थात् जिस शक्ति के कारण आत्मा, क्रमभावी पर्यायों की अपेक्षा उत्पाद-व्ययरूप तथा अक्रमभावी गुणों की अपेक्षा ध्रुव रहता है, उसे उत्पाद-व्यय-ध्रुवत्वशक्ति कहते हैं।

१९. **परिणामशक्ति – द्रव्यस्वभावभूतध्रौव्यव्ययोत्पादालिंगितसदृशविसदृशरूपैकास्तित्वमात्रमयी परिणामशक्तिः।** अर्थात् जिस शक्ति के कारण आत्मा, ध्रौव्य से आलिंगित (स्पर्शित), सदृश रूपता और उत्पाद-व्यय से आलिंगित विसदृश रूपता धारण करता हुआ भी एक अस्तित्वमात्रमयी रहता है, उसे परिणामशक्ति कहते हैं।

२०. **अमूर्तत्वशक्ति – कर्मबंधव्यपगमव्यंजितसहजस्पर्शादिशून्यात्मप्रदेशात्मिका अमूर्तत्वशक्तिः।** अर्थात् जिस शक्ति के कारण आत्मा, कर्मबन्ध के अभाव से प्रगट सहज तथा स्पर्श, रस, गंध और वर्ण से रहित आत्मप्रदेश धारण करता है, उसे अमूर्तत्वशक्ति कहते हैं।

२१. **अकर्तृत्वशक्ति – सकलकर्मकृतज्ञातृत्वमात्रातिरिक्तपरिणामकरणोपरमात्मिका अकर्तृत्वशक्तिः।** अर्थात् जिस शक्ति के कारण आत्मा, मात्र ज्ञाताभाव के अतिरिक्त समस्त कर्मकृत रागादि विकारी परिणामों का कारण नहीं होता है, उसे अकर्तृत्वशक्ति कहते हैं।

२२. **अभोक्तृत्वशक्ति – सकलकर्मकृतज्ञातृत्वमात्रातिरिक्तपरिणामानुभवोपरमात्मिका अभोक्तृत्वशक्तिः।** अर्थात् जिस शक्ति के कारण आत्मा, मात्र ज्ञाताभाव के अतिरिक्त समस्त कर्मकृत रागादि विकारी परिणामों का अनुभव नहीं करता है, उसे अभोक्तृत्व शक्ति कहते हैं।

२३. **निष्क्रियत्वशक्ति – सकलकर्मोपरमप्रवृत्तात्मप्रदेश-**

नैष्पंद्यरूपा निष्क्रियत्वशक्तिः। अर्थात् जिस शक्ति के कारण आत्मा, समस्त कर्मों के अभाव में प्रवृत्त निस्पन्द स्वरूप आत्मप्रदेशों वाला होता है, उसे निष्क्रियत्व शक्ति कहते हैं।

२४. **नियतप्रदेशत्व शक्ति – आसंसारसंहरणविस्तरणलक्षितकिंचिदूनचरमशरीरपरिमाणावस्थितलोकाकाशसम्मितात्मावयवत्वलक्षणा नियतप्रदेशत्वशक्तिः।** अर्थात् जिस शक्ति के कारण आत्मा, संसार अवस्था में संकोच-विस्तार सहित तथा मोक्ष अवस्था में चरम शरीर से किंचित् न्यून परिमाण में अवस्थित होते हुए भी आत्मा के अवयव अर्थात् उसके असंख्य प्रदेश लोकाकाश के बराबर ही रहते हैं, उसे नियतप्रदेशत्व शक्ति कहते हैं।

२५. **स्वधर्मव्यापकत्वशक्ति – सर्वशरीरैकस्वरूपात्मिका स्वधर्मव्यापकत्वशक्तिः।** अर्थात् जिस शक्ति के कारण आत्मा, सर्व शरीरों में एकस्वरूपात्मक ही रहता है अर्थात् अपने ज्ञान-दर्शन आदि धर्मों में व्यापक रहता है, स्वधर्मव्यापकत्वशक्ति कहते हैं।

२६. **साधारण-असाधारण-साधारणासाधारणधर्मत्वशक्ति – स्वपरसमानासमानसमानासमानत्रिविधभावधारणात्मिका साधारणासाधारणसाधारणासाधारणधर्मत्वशक्तिः।** अर्थात् जिस शक्ति के कारण आत्मा, स्व-पर द्रव्यों से समान, असमान और समानासमान ऐसे तीन प्रकार के भावों को धारण करता है, उसे साधारण-असाधारण-साधारणासाधारणधर्मत्वशक्ति कहते हैं।

२७. **अनन्तधर्मत्वशक्ति – विलक्षणानंतस्वभावभावितैकभावलक्षणा अनंतधर्मत्व शक्तिः।** अर्थात् जिस शक्ति के कारण आत्मा, विशेष-विशेष लक्षण वाले अनन्त स्वभावों से भावित (व्याप्त/पवित्रित/सिद्ध/संतृप्त/सरावोर/मिश्रित) एकभाव धारण करता है, उसे अनन्तधर्मत्व शक्ति कहते हैं।

२८. **विरुद्धधर्मत्वशक्ति – तदतद्रूपमयत्वलक्षणा विरुद्धधर्मत्वशक्तिः।** अर्थात् जिस शक्ति के कारण आत्मा, तत्स्वरूप और अतत्स्वरूप – ऐसे विरुद्ध धर्मों को एकसाथ धारण करता है, उसे विरुद्धधर्मत्व शक्ति कहते हैं।

२९. **तत्त्वशक्ति – तद्रूपभवनरूपा तत्त्वशक्तिः।** अर्थात् जिस शक्ति के कारण आत्मा, अपने स्वरूप परिणमन करता है, उसे तत्त्वशक्ति कहते हैं।

३०. **अतत्त्वशक्ति – अतद्रूपभवनरूपा अतत्त्वशक्तिः।** अर्थात् जिस शक्ति के कारण आत्मा, कभी परस्वरूप परिणमन नहीं करता है, उसे अतत्त्वशक्ति कहते हैं।

३१. **एकत्वशक्ति – अनेकपर्यायव्यापकैकद्रव्यमयत्वरूपा एकत्वशक्तिः।** अर्थात् जिस शक्ति के कारण आत्मा, अनेक पर्यायों (सहभावी पर्याय अर्थात् गुण एवं क्रमभावी पर्याय अर्थात् पर्याय) में व्यापक एकद्रव्यमय रहता है, उसे एकत्वशक्ति कहते हैं।

३२. **अनेकत्वशक्ति – एकद्रव्यव्याप्यानेकपर्यायमयत्वरूपा अनेकत्वशक्तिः।** अर्थात् जिस शक्ति के कारण आत्मा, एक द्रव्य में व्यापक अनेक पर्याय मय (सहभावी पर्याय एवं क्रमभावी पर्यायमय अर्थात् गुण-पर्यायमय) होता है, उसे अनेकत्वशक्ति कहते हैं।

३३. **भावशक्ति (प्रथम) – भूतावस्थत्वरूपा भावशक्तिः।** अर्थात् जिस शक्ति के कारण आत्मा, वर्तमान-अवस्था रूप रहता है, उसे भावशक्ति (प्रथम) कहते हैं।

३४. **अभावशक्ति – शून्यावस्थत्वरूपा अभावशक्तिः।** अर्थात् जिस शक्ति के कारण आत्मा, वर्तमान-अवस्था के अलावा अन्य अवस्थारूप नहीं रहता है अर्थात् अन्य अवस्थाओं की अपेक्षा शून्य

अवस्थारूप रहता है, उसे अभावशक्ति कहते हैं।

३५. **भावाभावशक्ति – भवत्पर्यायव्ययरूपा भावाभावशक्तिः।** अर्थात् जिस शक्ति के कारण आत्मा, वर्तमान पर्याय का आगामी समय में व्यय करता है, उसे भावाभावशक्ति कहते हैं।

३६. **अभावभावशक्ति – अभवत्पर्यायोदयरूपा अभावभावशक्तिः।** अर्थात् जिस शक्ति के कारण आत्मा, वर्तमान समय में अविद्यमान परन्तु आगामी समयों में होनेवाली पर्यायों को उनके अपने-अपने जन्मक्षणों में उत्पन्न करता है, उसे अभावभावशक्ति कहते हैं।

३७. **भावभावशक्ति – भवत्पर्यायभवनरूपा भावभावशक्तिः।** अर्थात् जिस शक्ति के कारण आत्मा, अपने-अपने समयों में होनेवाली वर्तमान पर्यायों को उन-उन समयों में उत्पन्न करता है, उसे भावभावशक्ति कहते हैं।

३८. **अभावाभाव शक्ति – अभवत्पर्यायाभवनरूपा अभावाभावशक्तिः।** अर्थात् जिस शक्ति के कारण आत्मा, अस्वभावभूत त्रिकालवर्ती पर्यायों को कभी नहीं होने देता है, उसे अभावाभाव शक्ति कहते हैं।

३९. **भावशक्ति (द्वितीय) – कारकानुगतक्रियानिष्क्रान्तभवनमात्रमयी भावशक्तिः।** अर्थात् जिस शक्ति के कारण आत्मा, कारकों के अनुसार क्रिया से रहित होकर भवन या परिणमनमात्रमयी होता है, उसे (द्वितीय) भावशक्ति कहते हैं।

४०. **क्रियाशक्ति – कारकानुगतभवत्तारूपभावमयी क्रियाशक्तिः।** अर्थात् जिस शक्ति के कारण आत्मा, सकलकारकों के अनुसार होनेरूप भावमयी होता है, उसे क्रियाशक्ति कहते हैं।

४१. कर्मशक्ति– प्राप्यमाणसिद्धरूपभावमयी कर्मशक्तिः। अर्थात् जिस शक्ति के कारण आत्मा, प्राप्त होने योग्य सिद्धरूप भावमयी होता है, उसे कर्मशक्ति कहते हैं।

४२. कर्तृशक्ति– भवत्तारूपसिद्धरूपभावकत्वमयी कर्तृशक्तिः। अर्थात् जिस शक्ति के कारण आत्मा, घटित होनेवाले सिद्धरूपभाव से अनुप्राणित होता है, उसको उत्पन्न करता है, उसे कर्तृशक्ति कहते हैं।

४३. करणशक्ति– भवद्भावभवनसाधकतमत्वमयी करणशक्तिः। अर्थात् जिस शक्ति के कारण आत्मा, घटित होनेवाले सिद्धरूप भाव के होने में उत्कृष्ट साधकतम होता है, उसे करणशक्ति कहते हैं।

४४. सम्प्रदानशक्ति– स्वयं दीयमानभावोपेयत्वमयी सम्प्रदान शक्तिः। अर्थात् जिस शक्ति के कारण आत्मा, स्वयं के द्वारा स्वयं को दिये जानेवाले भाव को प्राप्त करने योग्य होता है, उसे सम्प्रदान शक्ति कहते हैं।

४५. अपादानशक्ति– उत्पादव्ययालिंगितभावापायनिरपाय-ध्रुवत्वमयी अपादान शक्तिः। अर्थात् जिस शक्ति के कारण आत्मा, उत्पाद-व्यय से आलिंगित भावों के नष्ट होने पर भी स्वयं ध्रुवरूप बना रहता है, उसे अपादानशक्ति कहते हैं।

४६. अधिकरणशक्ति– भाव्यमानभावाधारत्वमयी अधिकरण शक्तिः। अर्थात् जिस शक्ति के कारण आत्मा, होनेवाले भाव का आधार बनता है, उसे अधिकरणशक्ति कहते हैं।

४७. सम्बन्धशक्ति– स्वभावमात्रस्वस्वामित्वमयी संबंध-शक्तिः। अर्थात् जिस शक्ति के कारण आत्मा, स्वभावरूप केवल अपने भावों का स्वामी होता है, उसे सम्बन्धशक्ति कहते हैं।

– प्रस्तुति : डॉ. राकेश जैन शास्त्री, नागपुर

श्री प्रवचनसारजी - ४७ नय

जिस प्रकार ज्ञान मात्र आत्मा में अनन्त शक्तियाँ विद्यमान हैं, उसी प्रकार उसमें अनन्त धर्म भी विद्यमान हैं। आचार्य अमृतचन्द्रदेव ने समयसार की आत्मख्याति टीका में ४७ शक्तियों का वर्णन किया है और प्रवचनसार की तत्त्वप्रदीपिका टीका में ४७ नयों का वर्णन किया है।

अनन्त धर्मों में व्याप्त धर्मी आत्मा श्रुतज्ञान प्रमाण पूर्वक स्वानुभव से जाना जाता है। यह श्रुतज्ञान अनन्त नयों में व्याप्त है जो कि एक-एक धर्म को विषय बनाते है।

४७ शक्तियों को जानने से आत्मा के वैभव का ज्ञान होता है और ४७ धर्मों को जानने से आत्मा के स्वरूप तथा उसमें विद्यमान अनेक योग्यताओं का परिचय प्राप्त होता है, जिससे आत्मा को अधिक स्पष्टता व गहराई से जाना जा सकता है।

यहाँ ४७ नयों के माध्यम से ४७ धर्मों के स्वरूप की संक्षिप्त चर्चा की जा रही है।

इन ४७ नयों के नाम इस प्रकार है :-

१. द्रव्यनय, २. पर्यायनय, ३. अस्तित्वनय, ४. नास्तित्वनय, ५. अस्तित्वनास्तित्वनय, ६. अवक्तव्यनय, ७. अस्तित्व-अवक्तव्यनय, ८. नास्तित्व-अवक्तव्यनय, ९. अस्तित्व-नास्तित्व-अवक्तव्यनय, १०. विकल्पनय, ११. अविकल्पनय, १२. नामनय, १३.स्थापनानय, १४. द्रव्यनय, १५. भावनय, १६. सामान्यनय, १७. विशेषनय, १८. नित्यनय, १९. अनित्यनय, २०. सर्वगतनय, २१. असर्वगतनय, २२. शून्यनय, २३. अशून्यनय, २४. ज्ञानज्ञेय-अद्वैतनय, २५. ज्ञानज्ञेय-द्वैतनय, २६. नियतिनय, २७. अनियतिनय, २८. स्वभावनय, २९. अस्वभावनय, ३०. कालनय, ३१.अकालनय, ३२. पुरुषकारनय, ३३. दैवनय, ३४. ईश्वरनय, ३५. अनीश्वरनय, ३६. गुणीनय, ३७. अगुणीनय,